

विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। -सुफियान सौरी

प्रकृति, पर्यावरण और आयुर्वेद का अद्भुत संगम

सचमुच प्रकृति, पर्यावरण और आयुर्वेद का अद्भुत संगम है। मानव जीवन के लिए तीनों कारकों के एकाकार होने की आज के समय महती जरूरत है। इससे प्रकृति को जहाँ साफ सुथरा रखा जा सकता है वहाँ पर्यावरण भी हमारे अनुकूल होगा जिससे आयुर्वेद को भी संरक्षित रखा जा सकेगा। जो मनुष्य प्रकृति के जितना अधिक अनुकूल है। स्वास्थ्य की दृष्टि से वह व्यक्ति उतना ही अधिक निरापद एवं व्याधियों के आक्रमण से दूर होगा। मनुष्य का आहार-विहार हो या रहन-सहन, वह सर्वथा प्रकृति सापेक्ष होता है।

पर्यावरण प्रदूषण रोकने के लिए काफी धन व्यय किया जा रहा है। फिर भी आशानुकूल सफलता नहीं मिल रही है। वनौषधि गारंटी है। समुचित संरक्षण के अभाव में विभिन्न वनौषधियों का धीरे-धीरे लोप होता जा रहा है और हम जाने-अनजाने में अपनी बहुमूल्य संपदा को खोते जा रहे हैं। इससे सर्वाधिक हानि आयुर्वेद की हुई है।

मनुष्य का प्रकृति से अटूट सम्बंध है। प्रकृति की रक्षा, उसके संरक्षण और विलुप्ति की कगार पर पहुंच रहे जीव-जंतु तथा वनस्पति की रक्षा का संकल्प प्रत्येक मानव का है। प्रकृति का संरक्षण प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण से सर्वोच्च है। इनमें मुख्यतः पानी, धूप, वातावरण, खनिज, भूमि, वनस्पति और जानवर शामिल हैं। प्रकृति हमें पानी, भूमि, सूर्य का प्रकाश और पेड़-पौधे प्रदान करके हमारी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करती है। इन संसाधनों का उपयोग विभिन्न चीजों के निर्माण के लिए किया जा सकता है जो निश्चित ही मनुष्य के जीवन को अधिक सुविधाजनक और आरामदायक बनाते हैं।

भारतीय संस्कृति प्रकृति और पर्यावरण का बहुत आदर करती है और आयुर्वेद की तरफ रूझान इसका सबूत है। आयुर्वेद को समग्र मानव विज्ञान कहा जा सकता है। 'पेड़ों से लेकर प्लेट तक, शारीरिक बल से मानसिक स्थिति तक' आयुर्वेद का गहरा प्रभाव होता है।

आयुर्वेद प्राकृतिक एवं समग्र स्वास्थ्य की पुरातन भारतीय पद्धति है। यदि हमें प्रकृति को बचाना है तो पर्यावरण संरक्षण पर जोर देना होगा। औषधीय पेड़-पौधे लगाने होंगे। जिससे पर्यावरण दूषित होने से तो बचेगा ही, साथ ही आयुर्वेद का प्रसार भी होगा।

हमारा शरीर प्रकृति के पांच तत्वों से मिल कर बना है। यदि हम प्रकृति की रक्षा करेंगे तथा उससे अपनापन रखते हैं तो प्रकृति भी हमारे शरीर की रक्षा करेगी। हम अनेक प्रकार की बीमारियों से बचे रहेंगे। प्रकृति का संरक्षण मानव जाति का संरक्षण है क्योंकि ये प्राकृतिक तत्व ही हैं जो हमें जीवन देते हैं।

नहीं करते और यही वजह है कि प्रकृति ने भी अब हमारी चिंता छोड़ दी है। हमने बिना सोचे-समझे संसाधनों का दोहन किया है। यही वजह है कि अब पर्यावरण का संतुलन बिगड़ गया है और वाद, सूखा, सुनामी जैसी आपदाएं आ रही हैं। वरसों से पर्यावरण को हम इंसानों ने बहुत नुकसान पहुंचाया है। प्रकृति से साथ इंसान का लगातार खिलवाड़ एक भयानक विनाश को आमंत्रण दे रहा है, जहां किसी को बचने की जगह नहीं मिलेगी।

प्रकृति का संरक्षण हमारे सुनहरे भविष्य का आधार है। मनुष्य जन्म से ही प्रकृति और पर्यावरण के सम्पर्क में आ जाता है। प्राणी जीवन की रक्षा हेतु प्रकृति की रक्षा अति आवश्यक है। वर्तमान समय में विभिन्न प्रजाति के जीव जंतु, वनस्पतियां और पेड़-पौधे विलुप्त हो रहे हैं जो प्रकृति के संतुलन के लिए बहुत ही भयावह है। मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समय-समय पर प्रकृति का दोहन करता चला आ रहा है। अगर प्रकृति के साथ खिलवाड़ होता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब हमें शुद्ध पानी, हवा, उपजाऊ भूमि, शुद्ध पर्यावरण, वातावरण एवं शुद्ध वनस्पतियां नहीं मिल सकेंगी। इन सबके बिना हमारा जीवन जोना मुश्किल हो जायेगा। हमारा शरीर प्रकृति के पांच तत्वों से मिल कर बना है। यदि हम प्रकृति की रक्षा करेंगे तथा उससे अपनापन रखते हैं तो प्रकृति भी हमारे शरीर की रक्षा करेगी। हम अनेक प्रकार की बीमारियों से बचे रहेंगे। प्रकृति का संरक्षण मानव जाति का संरक्षण है क्योंकि ये प्राकृतिक तत्व ही हैं जो हमें जीवन देते हैं। ऐसे में यह समाज के हर व्यक्ति का दायित्व है कि वह अपने आसपास के प्रकृतिक संसाधनों की रक्षा करे।

भारतीय संस्कृति प्रकृति और पर्यावरण को जो सम्मान देती है उससे आयुर्वेद का गहरा नाता है। इसे पौधों से लेकर आकरी प्लेटों तक एक समग्र मानव विज्ञान के रूप में वर्णित किया जा सकता है। मौजूदा वक्त में विभिन्न देशों के छात्र आयुर्वेद और पारंपरिक दवाओं का अध्ययन करने के लिए भारत आ रहे हैं। यह दुनिया भर में लोक कल्याण के बारे में सोचने का सबसे माकूल वक्त है। आयुर्वेद पूरे शरीर को सुरक्षित रखता है। आयुर्वेद भारत की संस्कृति और प्रकृति से जुड़ा हुआ है। आयुर्वेद और योग भारत द्वारा पूरे मानव समाज और पृथ्वी को दिया अनमोल उपहार है। यह स्वस्थ रहने के उन स्थाई उपायों में है जो हमारी पृथ्वी की देखभाल करते हैं। हमें स्वस्थ रहने के लिए, न केवल अपने शरीर बल्कि अपने पर्यावरण का भी ध्यान रखना चाहिए। हमारी प्रकृति और पर्यावरण ने आयुर्वेद को संरक्षित कर मानव जीवन को बचने का कार्य किया है।

-अतिथि सम्पादक,
बाल मुकुन्द ओझा,
(वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार)

राशिफल गुरुवार 10 नवम्बर, 2022

मार्गशीर्ष मास, कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, गुरुवार, विक्रम संवत् 2079, रोहिणी नक्षत्र शुक्रवार प्रातः 5:08 तक, परिध योग रात्रि 9:12 तक, गर करण सांय 6:33 तक, चन्द्रमा वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-तुला, चन्द्रमा-वृष, मंगल-मिथुन, बुध-तुला, गुरु-मीन, शुक-तुला, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में। आज रोहिणी व्रत, ग्रहण वैध।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:07 तक, चर 10:50 से 12:11 तक, लाभ-अमृत 12:11 से 2:53 तक, शुभ 4:14 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:46, सूर्यास्त 5:35

मेघ	सिंह	धनु
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नौकरोंपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।	व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लेंगी। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बने लेंगे। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी।	अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवाहित मामलों से राहत मिल सकती है। अटक हुए कार्य बने लेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। चलते कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।
वृष	कन्या	मकर
मन:स्थिति ठीक रहेगी। वर्तमान में चल रहे मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।	परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।	व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेंगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। धन प्राप्त होगा।
मिथुन	तुला	कुंभ
आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि हो सकती है और घर-गृहस्थों के हकों पर निर्वहन रखना ठीक रहेगा। नौकरोंपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नजरों का सामना करना पड़ सकता है।	अट्टम भाव में चन्द्र शुभ नहीं है। व्यावसायिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।	घर-परिवार में शुभ-धार्मिक-मंगलिक कार्य के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।
कर्क	वृश्चिक	मीन
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित खोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।	परिवार में मंगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना का कार्यक्रम बन सकता है।	व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बने लेंगे। नौकरोंपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। परिवार में धन को प्रयत्न करने वाले सुसंदिग्ध प्राप्त होंगे।

प्रकृति में अंक सात का जीवन में क्या रहस्य है?

जल, थल और आकाश में जब हम देखते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि सभी प्रमुख प्रकृतिदत्त अवस्थाएं, संरचनाएं अथवा क्रियाएं सात के अंक पर ही ठहरती हैं। क्या ये सब अनायास ही हैं अथवा इनमें कहीं मानव या प्राणी जगत को प्रभावित करने के रहस्य भी समाहित हैं? मैं कोई ज्योतिषी नहीं और न ही भूगोलिक तत्ववेत्ता, केवल प्रकृति के निरन्तर निहारने और तत्पश्चात चिंतन से जो विचार मस्तिष्क में उपजे, उन्हें सजीकर एकत्रित कर यह प्रसंग उठा कि क्यों न इन सभी संकलित सूत्रों को क्रमबद्ध कर लेख लिखने का प्रयास कर प्रकाशित करवाया जाय? यह लेख इसी विचार एवं अवधारणा की उत्पत्ति है। पाठकों को यदि इसमें कुछ नया लगे और उनके ज्ञान वर्धन में कुछ बढ़ोतरी हो सके तो मेरा प्रयास फलीभूत होगा अब विषय को आगे बढ़ाए जिसको जानने के लिए आप उसुकु होंगे।

1. सप्त ग्रह मंडल -आकाश में तारामंडलों में उत्तर दिशा में अवस्थित सप्त ग्रह मंडल जिसमें सात तारे हैं यह एक ऐसा तारा का समूह है जो सदैव साथ ही रहते हैं। ध्रुव तारा हम सभी जानते हैं कि यह सदैव उत्तर दिशा में ही विद्यमान रहता है। कहते हैं समुद्र में नाविक रात के समय ध्रुव तारे से ही दिशा बोध करते थे। सप्त ऋषि मंडल के सातों तारों का नाम ऋषियों के नाम पर रखा गया है। एक क्रम के अनुसार भृगु, वरिष्ठ, अंगिरा, अत्रि, पुलस्त्य क्रतु और पुकाश; वही एक अन्य खोत के अनुसार महर्षि अत्री, भारद्वाज, गौतम, जमदग्नि, कश्यप, विश्वामित्र और विश्वा। इस सप्त मंडल की विशेषता है कि ये सभी बिखरते नहीं, हमेशा एक ही डिजाइन में ध्रुव तारे के चारों ओर घूमते प्रतीत होते हैं।

2. सात महाद्वीप- पृथ्वी का थलीय क्षेत्र सात महाद्वीपों में बंटा है जैसे- उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, एशिया, अफ्रीका, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, अंटार्क्टिका। ये सातों महाद्वीप एक-दूसरे से अलग होते हुए, जलवायु, मृदा वनस्पति, जीव-जंतु आदि अनेक विशेषताओं में भिन्न हैं।

3. सात समुद्र- अंग्रेजी में सी, ओसियन नाम प्रयुक्त होते हैं। समुद्र से मेरा आशय महासागर से है। उदाहरण; एटलांटिक उत्तरी प्रशांत, दक्षिणी प्रशांत, आर्कटिक, अरब सागर, हिन्द महासागर, दक्षिणी महासागर, छोटे-मोटे सागर पृथ्वी पर और भी हैं जैसे- भूमध्य सागर, लाल सागर, कस्पेसीन, काला सागर आदि,

4. सात ग्रह- उदाहरण; बुध, शुक, पृथ्वी, मंगल, बृहस्पति, शनि और केतु। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार इन सभी ग्रहों का प्रभाव प्राणी जगत पर पड़ता है। ज्योतिष एक बड़ा एवं समृद्ध विषय है। मैं तो इतना जानता हूँ कि ज्योतिष प्राचीन काल से ही सभी तरह के विषयों व जिज्ञासाओं की सफल पर रखा गया है। एक क्रम के अनुसार भृगु, वरिष्ठ, अंगिरा, अत्रि, पुलस्त्य क्रतु और पुकाश; वही एक अन्य खोत के



प्रो.डॉ. वीर बहादुर सिंह

पुरोहित या ज्योतिषाचार्य शहरों में ज्योतिष के कार्यालय खोल लेते हैं और सेवा के साथ अपनी आजीविका भी इसी कार्य से वहन करते हैं। सूर्य और चंद्र ग्रहण के घटित होने की गणना प्राचीन काल से हमारे तत्ववेत्ता ऋषि करते रहे हैं जिसकी सटीकता अब पढ़े-लिखे अंतरिक्ष वैज्ञानिक भी सराह रहे हैं। ग्रहण का समय, कहां दिखेगा और कहां नहीं, कितना होगा खंडग्रास या खंडग्रास यह सब ज्योतिष ज्ञान से पूर्णतः संभव होता रहा है।

5. सात आध्यात्मिक चक्र- मानव शरीर में सात आध्यात्मिक चक्र- ध्यान और आध्यात्मिक उन्नति के लिए कई लोग ध्यान योग का अभ्यास करते हैं। योग विशेषज्ञों की देख रेख में यह क्रिया करना बाँधित है। तत्पश्चात साधक दूसरे चक्र जिसे स्वाधिष्ठान कहते हैं वहां

ध्यान केंद्रित करता है। यह केंद्र जननी के ठीक ऊपर (पेड़ू) के मध्य स्थित है, इसके बाद नाभिक के ठीक नीचे मणिपूरक चक्र होता है।

6. संगीत में भी सात स्वर- स, रे, ग, म, प, द, और नी.. इन्हीं सात स्वरों से पूरा संगीत सवरता है, चाहे पाश्चात्य हो अथवा भारतीय संगीत। इनको किसी को भी भलीभांति समझ सकते हैं।

7. इंद्र धनुष के सात रंग- में सात रंगों के अर्थ गोला। वर्षा ऋतु में आकाश में सूर्य की विपरीत दिशा में जल की सूक्ष्म बूंदों से सूर्य किरणों परावर्तित हो सात रंगों के अर्थ गोल एक के ऊपर एक ऐसे बनते हैं कि उनका रंग अलग-अलग व अर्थ चंद्राकार वृत्त में दीखता है। रंगीन व्रताओं का कभी क्रम बदलता नहीं देखा। पैराबोला में सबसे ऊपरी व्रत लाल रंग का, उसके नीचे सटा हुआ नारंगी, फिर पीला, फिर हरा, उनके बाद नीला, इंडिगो और आखिर में बैंगनी। जीवन में रंगों का सटीक महत्व है।

8. सप्ताह में सात दिन- रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुकवार और शनिवार। सभी दिनों के नाम ग्रहों के नाम पर यथा सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध,....शनि रखे गए हैं।

9. सात फेरे - विवाह बंधन के समय सात फेरे; सनानी परंपरा में वर-वधु को पुरोहित मन्त्रों के साथ अग्नि

के सात चक्कर लगावाता है, जो सम्पूर्ण और सात जन्मों की सपथ के साथ संपन्न होती है।

10. मुसलमानों में 786 एक पवित्र अंक अथवा सूचक माना जाता है जैसे- हिन्दुओं में ॐ।

11. सातवें दिन पूजा - शारदीय नव रात्रि में माँ काली की पूजा-अर्चना ध्यान आदि सातवें दिन किया जाता है।

12. रामायण के साथ काण्ड- अथवा रामचरित मानस में भी सात काण्ड: राम कथा बाल काण्ड, अयोध्या काण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किंधा काण्ड होती हुई सुंदर काण्ड, लंका काण्ड और आखिर में उत्तरकाण्ड, जिसमें भगवान श्री राम सभी शंकाओं और प्रश्नों का समुचित उत्तर देकर समाधान करते हैं, का विस्तृत वर्णन किया गया है और इस प्रकार राम कथा को सात कांडों में समाहित कर समाप्त किया गया है।

मेरा इस लेख को लिखते समय आशय था कि सम्बंधित विषय विशेषज्ञ उपरोक्त सभी पहलुओं पर विस्तृत अनुसन्धान करें और इनके पीछे छिपे या जुड़े रहस्यों से पर्दा उठाकर जानकारी से विषय सामग्री को सुदृढ़ करें।

उपरोक्त अंक 7 के सम्बंधित प्रकरण जो मुझे याद थे यहां लेख में परोस दिए गए हैं, पाठक पढ़े, ज्ञानवर्धन करें और अपने चिंतन से मुझे भी लाभान्वित करने का कष्ट करें।

प्रो.डॉ. वीर बहादुर सिंह,
पूर्व कुलपति एवं डेप्युटी विज्ञान एम.पी.यू.ए.टी. उदयपुर

शहरी रोजगार गारंटी: रेहाना रियाज के गृह नगर चूरू में महिलाओं को नहीं मिली मजदूरी!

चूरू, (कासं)। राजस्थान महिला आयोग की अध्यक्ष रेहाना रियाज के गृह नगर चूरू में शहरी रोजगार गारंटी के तहत महिलाओं को आज तक मजदूरी नहीं मिली है यहां महिला मजदूर प्रताड़ित हो रही हैं। उनकी कोई सुनवाई भी नहीं हो रही है। नगर परिषद चूरू में कांग्रेस की मनोनीत पार्षद बाली बाई ने आज शहरी रोजगार गारंटी योजना में भारी अनियमितता होने के आरोप लगाए हैं। बाली बाई ने कहा कि दर्जनों महिला मजदूरों को आज तक एक रुपए का भी भुगतान नहीं हुआ है। उन्होंने कहा कि महिला मजदूरों को पहले इंद्रमणि पार्क

- कांग्रेस की मनोनीत पार्षद बाली बाई के आरोपों से आयुक्त मधराज डूडी ने कमी काटी
- '370 जॉब कार्ड बने हैं, जबकि काम 40 से 50 ही करते हैं'
- सड़कों पर झाड़ू निकाली है, उसके बाद भी आज तक कुछ भी नहीं मिला : तायरा बानो

प्रकार अन्य दर्जनों महिलाओं ने यहां कलेक्ट्रेट में सफाई करते हुए मजदूरी के रूप में सफाई करने की गुहार लगाई। उल्लेखनीय है कि चूरू में प्रभारी मंत्री बृजेंद्र ओला, पूर्व विधायक हाजी मकबूल मंडेलिया, सभापति पायल

सैनी, कलेक्टर सिद्धार्थ सिहाग आदि ने जॉब कार्ड वितरित करके योजना को नकारते हुए कहा कि तीन पखवाड़े का रुपया जिसमें काम किया, उसके खाते में जमा हो गया है। डूडी ने कहा कि एक दो का बैंक खाता सही नहीं होने से भुगतान नहीं हुआ होगा।

सरकार का अन्न दाता को ऊर्जा उत्पादन कर्ता बनाने का सपना कैसे साकार होगा?

पी एम कुसुम कंगोनेट सी योजना को पिछले 3 वर्षों से तीनों डिस्कॉम धरातल पर वास्तविकता में अमली जमान नहीं रहने रुपए हैं। डिस्कॉम की इस असफलता को छुपाने के लिए सरकार ने सौर कृषि आजीविका योजना प्रदेश को समर्पित की है। इस नई योजना के कारण किसानों को पी एम कुसुम कंगोनेट सी योजना से मिलने वाले अनेक लाभों से वंचित किया जा रहा है। इसमें किसानों को मिलने वाली अतिरिक्त आय, विद्युत खीजत में कमी, वितरण हानि में कमी आदि सम्मिलित है।

क्या कारण रहे ही सरकार द्वारा सौर ऊर्जा उत्पादन से संबंधित तीन वर्ष पूर्व बड़े प्रचार-प्रसार के साथ किसानों के हितां को ध्यान में रखकर देश को समर्पित की गई योजना अब ठण्डे बस्ते में डालकर पारट सी की संशोधित योजना राज्य सरकार द्वारा प्रदेश में समर्पित की गई है। जिससे प्रदेश का किसान भ्रमित है तथा वह समझ नहीं पा रहे हैं कि क्या यह योजना उनके लिए निम्न बिन्दुओं के मध्यनजर हितकर है :-

- कुसुम योजना कंगोनेट सी में विद्युतीकृत कुओं पर स्वीकृत भार से दो गुना अधिक क्षमता के सोलर पैनल लगाकर विकेंद्रीकृत पावर उत्पादन करने से किसानों को मुफ्त की बिजली मिल जाती। इस अतिरिक्त पावर को डिस्कॉम को सप्लाई करके किसान अपनी आय में वृद्धि कर पाता और इस प्लांट की स्थापना के लिए बैंकों से जो लोन लेता उसको समय पर चुका भी देता। इस प्रकार स्वतः ही विद्युत खीजत पर अंकुश लग जाता एवं चोरी की संभावनाओं भी समाप्त हो जाती। इस प्रकार किसानों को होने वाली इस अतिरिक्त आय को रोकने का एक कुत्सित प्रयास यह सौर कृषि आजीविका योजना है।
- राज्य सरकार द्वारा सौर ऊर्जा से 4000 मेगा वाट विद्युत उत्पादन का लक्ष्य वर्ष 2024-25 तक हासिल करने का निर्धारित किया गया है। इस नई योजना से 4000 मेगा वाट में से कितनी सौर ऊर्जा का उत्पादन इस नई में योजना होगा, यह स्पष्ट नहीं किया गया है।
- किसान को उसकी भूमि लीज पर देने पर लीज राशि 80,000/- रुपये प्रतिवर्ष से प्रति हेक्टेयर डिस्कॉम किसान को 26 वर्ष तक देना। लेकिन 26 वर्ष बाद 80,000/- रुपये की वैच्यु नगण्य होगी। इसे मध्यनजर रखते हुए किसान अपनी जमीन सोलर पावर उत्पादन करने के लिए विकास कर्ता को देगा, इसकी सम्भावना कम है।
- जहाँ पर 33 केवी सब स्टेशन है, वहाँ पर एग्रीकल्चर लोड विकसित है, इसका मतलब वह जमीन कृषि योग्य है, लेकिन कुछ जमीन पर पानी के अभाव में सिर्फ बरसात की फसल होती है उसे राजस्थान में बंजर भूमि की श्रेणी में डाला गया है।

राजस्थान में बंजर भूमि अधिक होने की परिस्थिति में कोई भी किसान 80,000/- रुपये प्रति हेक्टेयर प्रति वर्ष के हिसाब से अपनी जमीन के पेड़ कटवा कर सोलर प्लांट लगाने के लिए देगा, ऐसी सम्भावना कम है। इस प्रकार इन जमीनी हकीकों में यह योजना धरातल पर आ पाएगी, इसकी संभावना नगण्य है।

5. कुसुम योजना 3 वर्ष पूर्व राष्ट्र को समर्पित की गई थी, उसका मुख्य लक्ष्य किसानों को मुफ्त स्वच्छ बिजली देना, विद्युत क्षति पर अंकुश लगाना, दिन में ग्रामीण कुटीर उद्योग, फूड इण्डस्ट्री को विद्युत उपलब्ध कराकर विकसित करना एवं पलायन रोकना, किसानों की आय में वृद्धि करना आदि था। लेकिन पिछले 3 वर्षों में जिस प्रकार से सरकार द्वारा इस योजना को लेकर प्रगति की जा रही है, उससे तो कोई आशा नहीं दिख रही है कि योजना को सफल बनाने के लिए कोई सार्थक प्रयास किया जायेगा।

6. कुसुम योजना ए और सी को धरातल पर लाने के लिए विद्युत विभाग व आर.आर.ई.सी. में हजारों इंजीनियर कार्यरत है। जबकि कुसुम योजना की धरातल पर लाने के लिए एक भी विद्युत इंजीनियर काम नहीं कर रहा है। उसके बावजूद भी यह योजना अपने लक्ष्य की तरफ निरंतर बढ़ती जा रही है। इससे यह स्पष्ट होता है कि वितरण निगमों

एवं सरकार में बैठे हुए अधिकारियों का इस योजना के सफल क्रियान्वयन के प्रति उत्तरदायित्व नहीं है।

हम यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि उद्योगपतियों से डिस्कॉम 2 रुपये 11 पैसे में विद्युत खरीदती है एवं 1.25 रुपये से 1.50 रुपये प्रति यूनिट दर से रिन्व्यूएबल एनर्जी सर्टिफिकेट के प्रावधान (4 प्रतिशत से समय-समय पर बढ़कर 8 प्रतिशत हो गया है) डिस्कॉम से 3.43 रुपये से 4.08 रुपये ओपन एक्सेस से बिजली खरीदता है। प्रसारण खिजत भी करीब 8 प्रतिशत वहन करना पड़ता है।

जबकि कुसुम 'ए' योजना में वर्तमान दर 3.14 रुपये निर्धारित है। समय पर भुगतान करने पर 7 पैसे प्रति यूनिट एस.पी.जी. से 40 पैसे प्रति यूनिट दर से भारत सरकार द्वारा रिवेटे दे दिया जाता है। 1.72 रुपया से 1.97 रुपया तक आर.ई.सी. से प्राप्त हो जाता है। डिसेंट्रलाइज्ड पावर जेनरेशन से खिजत नगण्य है। इस प्रकार डिस्कॉम को कुसुम योजना कंगोनेट्स से 1.17 रुपये से 1.42 रुपये में ही कम खर्च में विद्युत उपलब्ध हो जाती है। कुसुम 'सी' योजना में और ही कम लागत में विद्युत डिस्कॉम को उपलब्ध हो जाती है। ऐसी परिस्थितियों में हम यह कैसे कह सकते हैं कि यह 'ए' और 'सी' कुसुम योजना (किसान ऊर्जा सुरक्षा और उत्पादन महाअभियान) किसानों एवं सभी के लिए आर्थिक रूप से सम्बल प्रदान करने वाली साबित होगी।

विदेशी मेहमान पक्षी तिलोर का आगमन

पोकरण, (निस्)। परमाणु नगरी पोकरण सहित जैसलमेर जिले में इन दिनों विदेशी पक्षियों मेहमानों का आवागमन सर्दी की गुलाबी दस्तक के साथ शुरू हो गया है। अरब, चीन, मंगोलिया देशों से पाए जाने वाले तिलोर बस्टर जाति के पक्षियों के आने का सिलसिला लगातार जारी है। गोड़ावण पक्षी की तरह दिखने वाला तिलोर बहुत ही आकर्षक मनमोहक पक्षी है। सीमावर्ती क्षेत्र रामगढ़ एवं खेतोलाई, चोलिया क्षेत्रों में विदेशी पक्षी मेहमानों का आवागमन शुरू हो गया है।

पर्यावरण प्रेमी राधेश्याम पेमाना ने जानकारी देते हुए बताया कि विदेशी पक्षी मेहमानों का सर्दी के मौसम में यहां पर डेरा डाला रहता है। तिलोर प्रजाति के पक्षी सांप, बिच्छू, टीड, मकोडे खाकर पर्यावरण का संतुलन रखते हैं। विश्वाई ने जानकारी देते हुए बताया कि तेज झप से उड़ान करने वाला यह पक्षी पलक झपकते ही नजरों से गायब हो जाता है। वहीं कुदरत की बनावट ही बालू मिट्टी की जैसी होने के कारण आमतौर पर नजर नहीं आता



रामगढ़, खेतोलाई क्षेत्र में विदेशी पक्षियों का आगमन शुरू हो गया।

है। पर्यावरण प्रेमी राधेश्याम पेमाना लगातार पशु पक्षी एवं पर्यावरण एवं संरक्षण को बचाने की मुहिम को लेकर जंगलों में अधिकांश समय बितते हैं।